ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

डॉ0 भीमराव अंबेडकर जी के आर्थिक दार्शनिक विचार

Economic Philosophical Thoughts of Dr. Bhimrao Ambedkar

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 22/120/2021, Date of Publication: 23/12/2021

स्मिता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
राजकीय महिला महाविद्यालय,
डी0एल0डब्ल्यू0,
वाराणसी, भारत

सारांश

अगर हमें सामाजिक आर्थिक मुद्दों को समझना है तो डा भीमराव अम्बेडकर जी को उनके सामाजिक आर्थिक विचारो को समझना होगा । सामाजिक संघर्षों के साथ कही ना कही आर्थिक पक्ष उनके साथ जुड़ा रहा। उन्होंने पूँजीवादी व्यवस्था को ख़त्म करने के लिए उन्होंने 1923 में लंदन स्कूल ओफ एकनामिक्स से डी एस सी की डिग्री प्राप्त की और सामाजिक एवं आर्थिक असमानता पैदा करने वाली व्यवस्था से निजात पाने के लिए पुरज़ोर वकालत की । उन्होंने इसी क्रम में समस्त कृषि योग्य भूमि पर सरकार द्वारा अधिग्रहण करके उनको समुचित अनुपात में समाज के सभी सदस्यों के बीच समानता की बात पर बल दिया। अगर अंबेडकर जी के आर्थिक दार्शनिक के अंतर्गत उन्होंने महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के ऊपर बल दिया ।अगर महिलायें स्वावलंबी बनकर रोज़गार क्षेत्र में आती है तो उनमें आर्थिक मज़बूती आती है । उनको सामाजिक समानता प्राप्त होती है | क्योंकि अगर एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा समाज , शिक्षा, प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है ।

If we want to understand socio-economic issues, then Dr. Bhimrao Ambedkar ji has to understand his socio-economic views. Somewhere along with the social struggles, the economic side was associated with them. He obtained a DSC degree from the London School of Economics in 1923 to end the capitalist system and advocated vigorously to get rid of the system that created social and economic inequality. In this sequence, by acquiring all the cultivable land by the government, he stressed on the matter of equality among all the members of the society in proper proportion. If under Ambedkar's economic philosophy, he stressed on making women self-reliant. They get social equality. Because if a woman is educated then the whole society moves towards getting education.

मुख्य शब्दः आर्थिक उथन, भूमि, राष्ट्रिकरन, मुफ़्तशिक्षा, अवमूल्यन, न्यायसंगत।
Keywords: Economic Upliftment, Land, Nationalization, Free Education, Devaluation, Equitable.

प्रस्तावना

अगर हमें सामाजिक, आर्थिक मुद्दों को समझना है तो डा0 भीमराव अम्बेडकर जी को उनके सामाजिक आर्थिक विचारों को समझना होगा। वे एक ऐसे आदर्श समाजका निर्माण करना चाहते थे। जिसमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुता को महत्व दिया जाता हो। वे जब तक रहें तब तक सामाजिक संघर्ष करते रहें। उनकी स्नातक से लेकर पी0एच0डी0 तक की शिक्षा अर्थशास्त्र विषय में हुई। लेकिन उनकी पहचान एक अर्थशास्त्री के रूप में कभी नहीं बन पायी। क्योंकि जब वे 1923 में भारत आयें तो उनको यहाँ बहुत सारी सामाजिक कुरूतियों एवं रूढ़िवादिता दिखाई दी। इस कारण वह सामाजिक मुद्दों पर काम करने लगे। सामाजिक संघर्षों के मध्य कहीं न कहीं आर्थिक पक्ष उनके साथ जुड़ा रहा। उन्होंने हमेशा वंचित वर्गों को उद्यमी बनाने की बात को रखा, लेकिन उसके साथ-साथ वे महिलाओं को भी कुशल उद्यमी बनाने के पक्ष में थे। उनका मानना था कि "आर्थिक उत्थान के बिना कोई भी सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी संभव नहीं होगी।

डॉ0 अम्बेडकर जी ने भारतीय मुद्रा की समस्या, मंहगाई तथा विनिमय दर, भारत का राष्ट्रीय लाभांश, ब्रिटिश भारत में प्रान्तीय वित्त का विकास, प्राचीन भारतीय वाणिज्य, ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रशासन एवं वित्त भूमिहीन मजदूरों की समस्या तथा भारतीय कृषि की समस्या आदि विषयों पर तार्किक एवं व्यवहारिक समाधान भी दिये। अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने भी इस बात पर जोर दिये हैं कि "अर्थशास्त्र के विषय में वह मेरे पिता हैं।"

आर्थिक समस्याओं के प्रति उनके विचार व्यवहारिक थे। वे भारत के आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण भूमि व्यवस्था के बदलाव में देरी है। यह समस्या लोकतांत्रिक समाजवाद द्वारा ही हो सकता है। जिससे आर्थिक कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि होगी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का कायापलट हो सकेगा। वे आर्थिक समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे अहस्तक्षेप तथा वैज्ञानिक समाजवाद की निंदा करते थे। इस प्रकार उन्होंने आर्थिक, सामाजिक मजबूती के लिए अनेकों प्रयास किये जो निम्न प्रकार से है:-

पूंजीवादी व्यवस्था को खत्म करना

उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था को खत्म करने के लिए उन्होंने 1923 में लन्दन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स से डी0एस0सी0 की डिग्री प्राप्त की, और सामाजिक एवं आर्थिक असमानता पैदा करने वाली व्यवस्था से निजात पाने के लिए पुरजोर वकालत की। बाबा साहब ने 1923 में वित्त आयोग पर बात की। भारत में रिजर्व बैंक की स्थापना का खाका तैयार करने और प्रस्तुत करने का काम बाबा साहब अम्बेडकर जी ने किया।

कृषि को समाज की रीढ़ की हड्डी मानना

कृषि क्षेत्र के पुनर्गठन के लिए क्रांतिकारी कदम उठाया। कृषि योग्य भूमि के राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किये। वह लोगों के आर्थिक जीवन को इस प्रकार योजनाबद्ध करना चाहते थे कि उससे उत्पादकता को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने निजी उद्योगों का विरोध किया था। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में राजकीय स्वामित्व प्रस्तावित होना चाहिए। सामूहिक रूप से खेती होनी चाहिए। इसमें कृषि एवं उद्योग के लिए आवश्यक पूंजी सुलभ कराने की बात को अम्बेडकर जी ने कहा। वे चाहते थे, कि समस्त कृषि योग्य भूमि पर सरकार द्वारा अधिग्रहण करके, उनको उचित आकार के फर्मों में विभाजित करके समुचित अनुपात में समाज के सभी सदस्यों के बीच संवितरण कर दिया जाये। सामाजिक आर्थिक समानता की स्थापना के लिए अम्बेडकर की यह क्रांतिकारी सोच थी।
अम्बेडकर जी ने कृषि और कृषि कच्चे माल से ही उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।

आर्थिक व सामाजिक रूप से मजबूत करके शिक्षित करने की दिशा में

महिलाओं के संबंध में डॉ0 अम्बेडकर जी के विचार बड़े महान थे। उन्होंने महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के ऊपर बल दिया। अगर महिलाएं शिक्षित होगी तो उनमें स्वावलम्बन की भावना उत्पन्न होगी। महिलाएं अगर स्वालम्बी बनकर रोजगार क्षेत्र में आती हैं तो उनमें आर्थिक मजबूती आती है। आर्थिक रूप से मजबूत महिलाओं द्वारा सामाजिक मजबूती भी आती है। उनको सामाजिक समानता प्राप्त होती है। तथा वे पुरूषों की तरह अपने को हर क्षेत्र में सफल बनाने का प्रयास करती हैं। और यही प्रयास उनको सामाजिक समानता की ओर अग्रसर करता है। अगर महिलाओं को सामाजिक समानता व आर्थिक समानता और साथ ही शैक्षिक समानता प्राप्त होती है तो एक मजबूत संगठन का निर्माण होता है। क्योंकि अगर एक महिला अगर शिक्षित होती है तो पूरा परिवार, समाज शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है। इस प्रकार एक शिक्षित समाज का निर्माण होता है। शिक्षित समाज ही हमारे देश के आर्थिक विकास में सहयोग प्रदान करता है। अम्बेडकरजी के अनुसार सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने 6-14 साल के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने की बात पर बल दिया। उन्होंने गांवों के विकास पर चिन्ता जतायी कि ग्रामीण क्षेत्रों का विशेषकर विकास होना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को शिक्षित होना जरूरी है। ग्रामीण महिलाएं जब शिक्षित होगी, तभी गाँवों का विकास सम्भव है। क्योंकि गांव की महिला अगर शिक्षित होगी तो उनके बच्चे उनका परिवार सशक्त बनेगा। साथ ही वह कृषि से लेकर, लघु उद्योगों में विशेष योगदान देती है।
अगर आंकड़ों को देखा जाये तो 15-18 वर्ष आयु वर्ग की लगभग 39.4 प्रतिशत लड़कियाँ किसी भी संस्थान में पंजीकृत नहीं है। और इनमें से अधिकतर या तो घरेलू कार्यो में संलग्न है या तो भीख मांगने का काम करती है। भारत में वर्तमान समय में देखा जाये तो 145 मिलियन महिलाएं आज भी पढ़ने-लिखने जैसे कार्यो से दूर हैं। वर्तमान में महिलाओं विशेषकर ग्रामीण इलाकों की महिलाओं की शिक्षा को सुधारने की आवश्यकता है।

अम्बेडकर जी के विचारोंकी वर्तमान में प्रासंगिकता (आर्थिक, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में)

अगर अम्बेडकर के जो आर्थिक व सामाजिक विचारों को उनके राष्ट्र निर्माण की जो संकल्पना थी। वह आज के समय के लिए उपयुक्त थी। भारतीय अर्थव्यवस्था की सभी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं जैसे- गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई, पिछड़ापन, असमानता (व्यक्तिगत एवं क्षेत्रीय) विदेशी मुद्राओं के मुकाबले भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन आदि-आदि से संबंधित गम्भीर विचार-विमर्श उनके शोधों में देखा जा सकता है।
वह भारतीय अर्थव्यवस्था को एक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने अर्थशास्त्र के सिद्धान्त और शोधों का भारतीय समाज के संदर्भ में व्यवहारिक उपयोग किया और सामाजिक उद्देश्यों को वास्तविक अर्थ में साकार किया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य डा भीमराव अम्बेडकर जी के आर्थिक दार्शनिक विचारो की वर्तमान परिपेक्ष में प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

अम्बेडकर जी भारतीय अर्थव्यवस्था को एक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे उन्होंने अर्थशास्त्र के सिद्धांत और शोधो का भारतीय समाज के संदर्भ में व्यावहारिक उपयोग किया और सामाजिक उद्देश्यों को वास्तविक अर्थ में साकार किया। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनके आर्थिक दार्शनिक विचारो की परसंगिकता दिखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Contemporary issues in law and society, Dr. Raju Majhi, Suresh Chaturvedi.*
2. *भीमराव अम्बेडकर (2009) नारी उत्थान और पतन, गौतम बुक सेंटर।*
3. *https:// hindi.news18.com*
4. *https://dainikscunvad.in*
5. *Gupta Vishwa Prakash-Bhimrao Ambedkar Radha Publication New Delhi 2008*
6. *https://dainikscunvad.in*